कमल के फूल, बस्तर औरोले और संस्कृत के श्लोक से हुआ तैयार हुआ आइआइएम का लोगो

तीन दिन चले स्टूडेंट्स और फैकल्टी के काम्पिटिशन में जीत हुई बस्तर आर्ट की

विवेक मण्डपल्ली

आइआइएम का लोगो

रायपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

देश के प्रतिष्ठित मैनेजमेंट संस्थान आइआइएम के लोगों में छत्तीसगढ़ की सभ्यता और संस्कृति की झलक दिखाई दे रही है। सात वर्ष के बाद आखिरकार आइआइएम रायपुर का लोगो बन तैयार हुआ। इसकी खासियत यह है कि इसे किसी प्रोफेशनल आर्ट डिजाइनर ने नहीं, बल्कि संस्थान के स्टूडेंट विवेक मण्डपल्ली ने तैयार किया है। फैकल्टी और स्टूडेंट्स के बीच तीन दिन चले काम्पिटिशन के बाद आखिरकार बस्तर आर्ट से जुड़ी औरोले कलाकारी से सजे डिजाइन ने बाजी मारी। इस लोगो कि खासियत है कि इसमें बस्तर का गौरवपूर्ण इतिहास, आदिवासी सभ्यता और संस्कृति प्रतीक चिन्ह के रूप में प्रदर्शित हो रही है। कमल का फूल, बस्तर आर्ट के औरोले चक्र और संस्कृत के श्लोक से बने लोगो में कुछ पंक्तियों के माध्यम से शिक्षा के विकास को दर्शाया गया है। लोगो में मैनेजमेंट कर्तव्यों का भी उल्लेख किया गया है, जिसमें अपने मूल कर्तव्य से पीछे न हटने की बात लिखी गई है। इसके साथ ही संस्थान के प्रति सदैव जिम्मेदार रहने की शपथ का उल्लेख है।

संस्कृति और ज्ञान का समागम

विवेक मण्डपल्ली के तैयार किए लोगो में ज्ञान, शांति और प्रदेश की संस्कृति को एक साथ पिरोया गया है। कमल, संस्कृत, बस्तर आर्ट के समागम में संस्थान और छात्र की उन्नती को अंकित किया गया है। कमल फूल को उन्नती, संस्कृत के श्लोक 'स्वकर्म निरत: सिद्धि' यानी खुद के कर्म से ही ज्ञान प्राप्त करना। इसका उल्लेख किया गया है। वहीं बस्तर की कला के प्रतिक चिन्ह औरोले में डोकरा आर्ट से लिया गया है। गोल चक्र में बने प्रतिक चिन्ह सूर्य के ओज, शारीरिक शक्ति, मानसिक प्रबलता को दर्शाता है। इसके अलावा विभिन्न विधाओं को दिखाते हुए हमें सिखने और अभ्यास की क्षमताओं के विकास को निरंतर बनाये रखे का उल्लेख किया गया है।

> संस्थान का कोई लोगो नहीं बन पाया था। डायरेक्टर भरत भास्कर ने लोगो बनाने के लिए काम्पिटिशन करवाया। जिसमें सभी प्रोफेसरों और स्टूडेंट्स शामिल हुए। कई तरह के लोगों में फाइनल ईयर के स्टूडेंट विवेक माण्डपल्ली का बनाया बस्तर आर्ट प्रतिक चिन्ह सेलेक्ट किया गया है।'
>
> – **जागरूक दावरा**, जनसंपर्क अधिकारी, आइआइएम रायपुर

Naidunia 21 April 2018, P. 15